REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2018

गुजरात के दरिया किनारे पर विकसे हुए विहारधाम (प्रवासन संदर्भ में)

डा.हरेश के. पंचाल
इतिहास विभाग, नवजीवन आर्टस एन्ड कोमर्स कोलेज, दाहोद (गुजरात)

❊ सारांश :

गुजरात के १६०० कि.मी. लंबा दरियाकिनारा भारत के किनारो का ३०% हिस्सा है। खंभात और कच्छ के अखात तथा अरबी समुद्र पर कंडला का बडा कुदरती बंदर, मांडवी, नवलखी, बेडी, सिक्का, ओखा, पोरबंदर, वेरावल, जाफराबाद, भावनगर, भरुच और सुरत (मगदल्ला) ऐसे ११ मध्यकक्षा के बंदर और २८ लघु बंदरो से गुजरात का दरियाकांठा कुदरती सौंदर्य और व्यापारिक दृष्टि से समृद्ध है। जैसे आबु गुजरात के प्रदेश का हिस्सा नहीं, फिरभी गुजरातीओ के लिए उत्तम प्रवास स्थान है, ऐसे ही दीव केन्द्रशासित प्रदेश होनेके बावजूद भी गुजरातीओ के लिए दरियाकिनारा के प्रवासी स्थान के तौर पर सस्ता और सुलभ है।

गुजरातके दरियाकांठे विकसे हुए कुछ विहारधाम आज भी प्रवासीयो में प्रिय है। ऐसे प्रवासन धामो का थोडा परिचय लेंगे।

१. अहमदपुर मांडवी :

जूनागढ के नवाब ने अपने आराम के लिए एक खास महल बस्ती से दूर पोर्टुगीझ टापु दीव के नजदीक बनाया था। इस महल की चारो तरफ ऊंची दिवाल बनवाई थी। महल में से दीव के कलात्मक देवल, ऐतिहासिक इमारतें और ऊछलता हुआ दरियाकिनारा दिखाई देता था। भारत की स्वतंत्रता के साथ नवाबी शासन का अंत हुआ और नवाब का दरियाकांठे का यह भव्य महल प्रवास का यात्राधाम बन गया। अहमदपुर मांडवी के नाम से जाना जाता यह भव्य डुम हाउस गुजरात प्रवासन निगम को सौंप दिया है।

डुम हाउस की भव्यता का अनुभव करने जैसा है। पारेवा से घेरा हुआ डुम हाउस में प्रवासीओ का स्वागत किया जाता है। डुम हाउस के वरंडे में ताड के ऊंचे झुंड आये हुए है। इस प्रकार के ताडवृक्ष यहां पर ही देखने को मिलते है। डुम हाउसमें से समुद्र का नीलरंगी किनारा और दीव टापु का सुंदर आकार देख सकते है। महल की दिवाल के सामने बाजु साइबेरियन छांटवाले देवल दिखते है। आहलादह वातावरण को प्रवासी नजदीक से देख सके इसलिए गुजरात प्रवासन निगम द्वारा यहाँ कुटीरें तैयार की है। सौराष्ट्र की ग्रामप्रजा के आवासो जैसा नलिये का छत, माटी से लीपी हुई दीवाले, भीतों पर लोककला को उजागर करती सुशोभन, पोर्च में झूलती खुरशी और लोखं के नकुचा-आंकडीवाले गामठी दिखती यह कुटिरें अंदर से आधुनिक सगवड से सज्ज है। समुद्रमहल का सबसे बडा आकर्षण उसकी जलरमत है। समुद्र के सोनेरी तट पर स्पीड से दोडती बोट, वोटर स्कीइंग, रंगबेरंगी वोटर डिस्क आदि सज्ज बोटहाउस प्रवासीयों के मनोरंजन का भरपूर ध्यान रखते है।

अहमदपुर मांडवी केशोद से १४५ कि.मी. के अंतर पर है। नजदीक का रेल्वे मथक १५ कि.मी. दूर उना में है। राज्य परिवहन की बसें यहाँ पर नियमीत आती-जाती रहती है। केन्द्रशासित प्रदेश दीव यहाँ से बहोत नजदीक है।

२. चोरवाड :

जूनागढ के नवाब शोखीन है। उसकी साक्षी एक अन्य महल चोरवाड के सागरकांठे आज भी देशविदेश के प्रवासीओं को आराम और सुक्न के साथ भव्यता का एहसास कराता है। चोरवाड आज प्रवास के लिए रमणीय स्थल के तौर पर विख्यात है। चोरवाड में घूसते ही चारो तरफ की हरियाली प्रवासीओ का मन मोह लेती है। नारियल के ऊंचे वृक्षो की हारमाला, कुदरती वनराजी से भरपूर लीलेछम मेदान, इलायची और केले क वृक्ष, पर्यटको के आवन-जावन का मुख्य वाहन छकडा यहाँ की विशिष्टता है। उपरांत बलदगाडा, घोडागाडी भो यहाँ से रस्तो की भव्यता है। चोरवाड के विहारमहल की भव्य झगमगाट भी प्रवासीयों को आकर्षित करती है। सगवडता भरे आवास, राजाशाही की भव्यता से नीतरते खंड प्रवासीयो को अपनी भव्य जीवनशैली का आनंद देते है। पित्तल के पलंग, सोफा, आरस के फायर प्लेस, भव्य कलात्मक आयने के साथ ड्रेसिंग रुम और बाथरुम, कलात्मक और सुशोभित खंड प्रवासीयों के

जीवन के नीरस घटमाल में से थोडा समय आराम और भव्यता के माहोल में ले जाता है। गीच विस्तार, झडपी जीवन और अर्थ उपार्जन के झंझट में से मुक्त होकर यहाँ प्रवासी नये ताजगीपूर्ण और भव्य वातावरण में जीवन के लिए नया इंधन लेते है।

केशोद से ३२ कि.मी. अहमदाबाद से ४०० कि.मी. राजकोट से १६० कि.मी. और भावनगर से २९२ कि.मी. के अंतर पर चोरवाड आया हआ है। रेल्वे स्टेशन यहाँ से १० कि.मी. दूर है। प्रवासयों के लिए गुजरात परिवहन की बसें उपलब्ध है। यहाँ होटेल्स, भोजनालय है।

३. उभराट :

दक्षिण गुजरात के दरियाकांठे का रमणीय वनराजी से छाया हुआ विस्तार उभराट के नाम से जाना जाता है। मरोली से १६ कि.मी. और नवसारी से २९ कि.मी. के अंतर पे आया हुआ यह दरियाकांठा उसकी आरोग्यप्रद आबोहवा और सुंदर प्राकृतिक सौंदर्य के लिए पहचाना जाता है। गुजरात प्रवासन निगम का तोरण विहारधाम प्रवासीओ के रहने-खाने की सुंदर सगवडभरी सुविधा पूरी करता है। उपरांत यहाँ खानगी बंगले भी किराये पर मिलते है। प्रवासीओ की हेसियत के मुताबिक निवास, डोरमेटरी की भी रात को सुविधा है। दरियाकांठे के उत्तम यात्राधामो में उभराट का स्थान अग्र है।

४. तीथल :

दक्षिण गुजरात के दरियाकांठे वलसाड से चार कि.मी. के अंतर पे आया हुआ तीथल प्रवासधाम अरबी समुद्र के पूर्वकिनारे आया है। तीथल की हरियाली आरोग्यप्रद आबोहवा प्रवासीयो के लिए बहोत अच्छा आकर्षण है। यहाँ सेनेटोरियम भी है। गुजरात प्रवास निगम की ओर से दरियाकिनारे के नजदीक आवास बनाये है। खानगी बंगले में भी रहने-खाने की सुविधा है। यहाँ की आबोहवा ठंडी है। यहाँ गर्मी कम और शर्दी साधारण लगता है।

दरियाकिनारे ताड, नारियेली, आंबा, चीकुडी आदि के झाड बडी मात्रा में देखने को मिलते है। खुशनुमा आबोहवा वाले यह स्थल पर ताता कंपनी ने उसके कर्मचारीयों के लिए 'ताराबाग' में रहने की सुविधा की है। यहाँ सुंदर दरियाकिनारा के साथ तीन जैन साधुबंधु मुनिचंद्रविजयजी, कीर्तिचंद्रवीजयजी और जिनचंद्रविजयजी के आश्रम है। यहाँ की चोपाटी आर्कषक है। दरियाकिनारे सूर्यास्त का दृश्य देखने जैसा होता है। समुद्रकिनार सांइबाबा का अर्वाचीन शैली का मंदिर है। उपरांत चिंतामणि पार्श्वनाथ का जैन मंदिर, खारवा और कोलीओ की कुलदेवी तुलजा भवानी का तथा पादरदेवी के मंदिर आये है।

नजदीक का रेल्वे स्टेशन वलसाड पांच कि.मी. के अंतर पे है। यहाँ से अहमदाबाद ३३५ कि.मी., सुरत १०८ कि.मी. और मुंबई १६५ कि.मी. के अंतर पे है। अेस.टी.बस वलसाड से नियमीत मिलती है। रीक्षा और टेक्सी भी वलसाड से उपलब्ध है। गुजरात प्रवासन निगम के आवास उपरांत जाहेर बांधकाम खाता के गेस्ट हाउस सेनेटोरियम भी यहाँ है।

५. हजीरा :

सुरत जिल्ला के ओलपाड तालुका में तापी नदी के मुख पर समुद्रकिनारे बसा हुआ यह छोटे गाम में कोली और खारवाओं की बस्ती है। इस गाम का मूल नाम ठउ या ढुवा है लेकिन वर्षो पहले यहाँ वोकर नामक अंग्रेज अधिकारी डूब गया था और उसका हजीरा (मिनारेवाला सुंदर रोझो-कबर) होने के बाद उसका नाम हजीरा हुआ। सुरत से २९ कि.मी. के अंतर पे आया यह स्थल की आबोहवा आरोग्यवर्धक है। यहाँ का पानी लोह और गंधक मिश्रित होने के कारण आरोग्य के लिए लाभदायक है। यहाँ का दरियाकिनारा रेताल है। समुद्रकिनारे के पास पानी के कूवे आए हुए है। प्रवासीयों के लिए यहाँ प्रवासन निगम के निवास है। इसके अलावा सेनेटोरियम भी है। खानगी मकान और बंगले भी किराये पे मीलते है। नजदीक का रेल्वे स्टेशन २९ कि.मी. दूर सुरत है। एस.टी. की बसें सुरत से नियमीत यहाँ आती है। टेक्षीयों की सुविधा भी है। अहमदाबाद से ३०५ कि.मी. के अंतर पे आया हुआ दरियाकांठ की दीवादांडी पर से कच्छ, करांची और खंभात के अखात की ओर जाते वहाण, स्टीमर भी देख सकते है। यहाँ शुरु किये हुए खातर संकुल योजना और सूचित जहाजवाडा की योजना उसका भावि विकास बताते है।

६. डुमस :

सुरत से इक्कीस कि.मी. के अंतर पे आया हुआ दरियाकिनारा का रमणीय स्थल है। जबकि दरियाकिनारा यहाँ से दूर होता चला जाता है। इसके बाद भी उसकी आबोहवा के कारण वह हवा खानेका उत्तम स्थल है। सुरतीलाला छुट्टी के दिनो में यहाँ आते है। यहाँ स्वच्छ और सुविधा वाले सेनेटोरियम और गेस्टहाउस है। खानगी बंगले भी यहाँ किराये पर मिलते है। यहाँ की नयनरम्य वनराजी और ठंडी आबोहवा यात्रीओ को हंमेशा आकर्षित करते ह।

७. मांडवी :

कच्छ जिल्ला के भुज से ६० कि.मी. दूर आया हुआ मांडवी का सुंदर सागरतट प्रवासीयों का बरसों से आकर्षित रहा है। यह दरियाकांठा काठडा से तीन कि.मी. मांडवी से आठ कि.मी. और भुज से साठ कि.मी. के अंतर पे आया है।

सागरतट पे कुदरती ठंडे पवन का लाभ लेकर उसमें से वैकल्पिक बीजली उत्पन्न करने के दो विन्डफार्म मांडवी और तुणा में आये है। मांडवी के आहलादक दरियाकांठे पर जान्युआरी १९८६ में रुपये १८५ लाख के खर्चे पर स्थापा हुआ विन्डफार्म १.६ मेगावोट वीज उत्पादन क्षमता है। प्रतिवर्ष वह गुजरात विद्यतु बोर्ड को रु.२७ लाख की किंमती ग्रिड क्वोलिटी बीजली देता है। मांडवी के दरियाकिनारे की मुलाकात के साथ इस विन्डफार्म की मुलाकात भी लेनी चाहिए। उपरांत 'हुडियोकोठो' यानिकी दीवादांडी भी देखने लायक है , जो मांडवी से दो कि.मी. और भुज से ४५ कि.मो. दूर है।

मांडवी नजदीक का रेल्वे स्टेशन भुज ६० कि.मी. के अंतर पे है। अंजार ६२ कि.मी. है। यहाँ अेस.टी. की बसें नियमीत मिलती है। टेक्षी, रीक्षा जैसे वाहन भी उपलब्ध है। अहमदाबा से यह स्थल ४६२ कि.मी. के अंतर पे है। प्रवासीयो के लिए गेस्ट हाउस, जिल्ला पंचायत के विश्रामगृह और खानगी होटलो की सुविधा भी ज्यादा है।

८. गोपनाथ :

भावनगर से छहत्तर कि.मी. के अंतर पे आया हुआ बडा गोपनाथ का मंदिर ४०० साल पूराना मनाया जाता है। राजपीपला के गोपसिंह नामक राजा को पुत्र न था। किसी ने सलाह दी, 'सौराष्ट्र के दरियाकांठे एक जगा पर ओटले पर शिवलिंग मिलेगा वहाँ तु मंदिर बनायेगा तो तुझे पुत्र होगा।'

गोपसिंहने यहाँ आकर जहाँ शिवलिंग मिला वहाँ मंदिर बनाया और उसको पुत्र हुआ। गोपसिंह के नाम परसे यह मंदिर गोपनाथ मंदिर कहलाया। गोपनाथ का मंदिर बराबर समुद्र के कांठे पर आया है और इसलिए दरियाकांठे की ठंडी आबोहवा का अहसास करने और गोपनाथ के दशन यह एक पंथ दो काज से प्रवासी यहाँ रहने आते है। प्रवासीयों के रहने-खाने की सुंदर व्यवस्था यहाँ है। इसके लिए यहाँ बडा विहारधाम है। खाने के लिए विशाल भोजनालय है। यात्रालुओ को मुफ्त भोजन दिया जाता है। श्रावण मास में यहाँ बहोत यात्री आते है। श्रावणी अमास को यहाँ बडा मेला लगता है।

९. पीरम बेट :

सौराष्ट्र द्वीपकल्प के पूर्व किनारे पर भावनगर नजदीक आया हुआ पीरम टापु घोघा से दक्षिण से ७ कि.मी., लेकिन किनारे से सीधेसीधा चार कि.मी. के अंतर पे खंभात के अखात में आया हुआ है। पीरम टापु आमली के कातरा आकार का २.५ कि.मी. लंबा और ८०० मीटर पहोला है। उसके दक्षिण भाग के अपवाद को बाद करके पूरा टापु खडको के खराबा से उडकर आयी हुई रेती से बना है। समुद्र सपाटी से वह मात्र थोडी ऊँचाइ ह और जल नीचे के उसके ढोलाव २० से २२ मीटर की उंडाइ तक फला है।

दरियाइ मोजे उसकी भूमि सपाटी पर जोर से टकारते रहते है। इसलिए टापु नजदीक से पसार होते वक्त होडीओ को पूरे ध्यान से नीकालनी पडती है। इसके बावजुद उससे कभी कभार नुकसान भी होता है। घोघा और दहेज बंदर के बीच अवरजवर के लिए सेवा देती होडीयें भी पीरम होकर जाती है।

भूस्तरीय दृष्टिसे देखे तो पीरम का टापु नवविवृत्त है। इ.स.१८३६ में किया हुआ उत्खनन में यहाँ से विपुल मात्रा में जीवावशेष मिलते है। तब से यह टापु तृतीय जीव युग के सस्तन प्राणीयो के जीवावशेषो के कुदरती संग्रह तरीके खूब पहचाना जाता है। भूतकाल में विलुप्त हुई चतुस्पाद प्राणीयों की कुछ जाति संपूर्ण जीवावशेषो के असंख्य नमूने यहाँ से मिले हुए है। सख्त अस्थियुक्त कॉग्लोमरेट यहाँ का प्रादेशिक खडक है। उसमें मध्यम और ऊर्ध्व तृतीय जीवयुग (मातीसीन से प्लायासीन काल) का बकरा और डुक्कर, डाइनोथेरियम, शिवाथेरियम, घोडा, बलद, साबर, मगर के अलग-अलग स्वरुपो का, स्वच्छ जल के काचबे का और बडे कद की मछलीओ के अवशेष यहाँ देखने को मिलते है। उपरांत खोपरीया, अंगोपांगो के अस्थि, जडबे और दांत के अवशेष भी मिलते है।

दरियाकांठे का यह टापु पुरातत्वीय अवशेष और उसके कुदरती वातावरण के लिए देखने जैसा है।

१०. अलंग :

भावनगर शहर से ५० कि.मी. के अंतर पर तलाजा रोड पर विश्व का सबसे बडा जहाज तोडने का केन्द्र अलग आया है। त्रापज गाम से दस कि.मी. और साणोदर से २३ कि.मी. के अंतर पे आया हुआ अलंग नजदीक का रेल्वे स्टेशन भावनगर, अलंग के दरियाकांठे १८४ प्लोट आये है। हरेक प्लोट को जुडता मार्ग, अग्निशामक केन्द्र, स्ट्रीटलाइट, पाणी वितरण व्यवस्था, पोलीस स्टेशन, पोस्ट ओफोस, टेलिफोन अेक्सचन्ज, अस्पताल, सेनेटरी केन्द्र यहाँ है। बीस हजार मजदूर, अेजन्ट और बेपारी अलंग के साथ प्रत्यक्ष तौर पर जुडा हुआ है। ई.स.१९८३ की १३मी फब्रुआरी के रोज अेम.वी. कोटाटेन्जोन्ग नामक प्रथम जहाज यहाँ तोडा गया था। मे २००३ तक अलंगवाडा में कुल ३७०० अलग अलग कक्षा के जहाज तोडे गये है।

अलंग उद्योग के विकास के कारन भावनगर शहर और जिले में स्टील रोलिंग मिल्स की संख्या बढी है। आज १०६ रोलिंग मिल्स अस्तित्व में ह। औद्योगिक गेस उत्पादक युनिट्स १०२ जितने विकसे है। जबकि स्क्रेप प्रोसेसिंग युनिट ३०० जितने बढ है। उद्योग ने जिले और राज्य में रोजगारी की तके भी विकसाई है। १७००० जीतने प्रत्यक्ष रोजगारी की तके बढी है। जबकि परोक्ष तौर पर एक लाख इन्सान इस धंधे में से रोजगारी लेते है। विश्व का यह सबसे बडा जहाजवाडा देखने जैसा है। जहाज तोडने के उद्योग को देखने की इच्छा रखते प्रवासीयों के लिए मुलाकात का आगे बढता स्थल है। जहाज के विविध भागो को तोडने की पद्धति, उसको तोडने के उपयोग में लिये गए विशालकाय यंत्र और इसके लिए दिन-रात महेनत करते हुए मजदूरो को नजदीक से देखना जरुरी है। अलबत्त, अलंग के जहाज वाडा में खुबसुरत वातावरण की गेरहाजरी है लेकिन हरेक देखनेलायक स्थल सुंदर और रमणीय हो वह जरुरी नहीं। देखने, जानने और समजने की प्रवासी की वृत्ति को यह जहाजवाडा अवश्य संतोष देता है।

डा.हरेश के. पंचाल
इतिहास विभाग, नवजीवन आर्टस एन्ड कोमर्स कोलेज, दाहोद (गुजरात)